ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 22 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 24 अप्रैल, 2023 से रविवार 30 अप्रैल, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति द्वारा

महात्मा हंसराज जयंती : समर्पण दिवस के रूप में संपन्न

प्रत्येक शिक्षक धर्म शिक्षक की जिम्मेवारी का करे निर्वहन –डॉ. पूनम सूरी, प्रधान, आर्य प्रा. सभा

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रमुख शिष्यों में महात्मा हंसराज जी का अनुपम स्थान है। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति के द्वारा डी.ए.वी. सेंटेनरी पब्लिक स्कूल जगजीतपुर कनखल हरिद्वार में 22 अप्रैल 2023 को महात्मा हंसराज जी की जयंती समर्पण

हरिद्वार में आयोजित समपर्ण दिवस पर उदबोधन देते हुए सर्वश्री डॉ. पूनम सूरी जी, दीप प्रज्वलन करते हुए स्वामी विवेकानंद जी, विनय आर्य जी एवं अन्य महानुभाव, आर्य जगत एवं आर्य हेरिटेज पुस्तकों के विमोचन एवं महात्मा हंसराज जी के त्यागमय जीवन पर प्रेरक सांस्कृतिक कार्यक्रम के विहंगम दृश्य

दिवस के रूप में अत्यंत हर्षोल्लास के वातावरण में भव्य समारोह पूर्वक संपन्न हुई। इस अवसर पर केवल उत्तराखंड ही नहीं बल्कि देश के कोने-कोने से आए 900 से अधिक डी.ए.वी. शिक्षण संस्थानों के प्रिंसिपल, डायरेक्टर तथा डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति के गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। कार्यक्रम के आरंभ में सर्वप्रथम यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें परम श्रद्धेय आर्य रत्न पूनम सूरी जी तथा श्रीमती सूरी जी

> “समर्पण दिवस के अवसर पर आर्य प्रादेशिक सभा एवं डी.ए.वी. प्रबंधकर्त्री समिति के अध्यक्ष, पदमश्री डॉ. पूनम सूरी जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि युवाओं को शिक्षा से जोड़कर ही महात्मा हंसराज और महर्षि दयानंद सरस्वती जी के सपनों को पूरा किया जा सकता है। शिक्षा के माध्यम से ही समाज में वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार संभव है। वैदिक शिक्षा के बिना संस्कारित समाज की कल्पना संभव नहीं है। उन्होंने उपस्थित शिक्षकों को संदेश देते हुए कहा कि प्रत्येक शिक्षक धर्म शिक्षक रूप में सेवा कार्य करे।”

यजमान के पद पर आसीन रहे।

आर्य रत्न पूनम सूरी जी तथा सभी गणमान्य लोगों का पुष्प तथा शाल देकर स्वागत किया गया। डॉ. पूनम सूरी जी ने हे प्रभु दुर्गुण मेरे हर लीजिए भजन के माध्यम से ईश्वर से दुर्गुणों को दूर कर शुभ गुण देने की प्रार्थना की। डॉ. पूनम सूरी जी ने 10 संन्यासियों तथा 10 प्रबुद्ध जनों का अभिनंदन किया तथा समस्त जनसमूह

- शेष पृष्ठ 4 पर

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में आगामी कार्यक्रम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आहवान् पर
गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में

40वां वैचारिक क्रांति शिविर

दिनांक– 19 मई से 28 मई 2023 तक

स्थानः– आर्य समाज मंदिर, मेन बाजार, रानी बाग

उद्‌घाटन समारोहः– शुक्रवार 19 मई 2023 शाम 06:00

संकल्प दिवसः– रविवार 21 मई 2023 प्रात: 10:00

समापन समारोहः– रविवार 28 मई 2023 सायं 4:00 बजे

शिविर में भाग लेने के लिए शिविर्थी संपर्क करें।

सम्पर्क करें

जोगेन्द्र खट्टर 9810040982, आचार्य दया सागर 9425944843

कार्यक्रमानुसार आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

वेदवाणी-संस्कृत

सभी ऋतु रमणीय

वेद-स्वाध्याय

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः ।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः ॥
-साम. पू. 6 । 3 । 4 । 2
ऋषिः-वामदेवो गोतमः॥ देवता-ऋतुः॥ छन्दः-पङ्क्ति॥

शब्दार्थ- **वसन्तः**=वसन्त **इत् नु**=निश्चय से ही **रन्त्यः**=रमणीय है और **ग्रीष्मः**=गर्मी की ऋतु भी **इत् नु**=निश्चय से ही **रन्त्यः**=रमणीय है। **वर्षाणि**=वर्षाएँ अनु **शरदः**=उसके पीछे आने वाले शरद् के दिन और **हेमन्तः**=हेमन्त ऋतु, तथा **शिशिरः**= पतझड़ की ऋतु भी **इत् नु**=निश्चय से **रन्त्यः**=रमणीय है।

विनय- मेरे प्रभु की सृष्टि में सभी ऋतुएँ रमणीय हैं। हर एक ऋतु में अपनी-अपनी रमणीयता है। जो लोग प्रभु के प्रेम को नहीं जानते वे ही हर समय, हर ऋतु में असन्तुष्ट रहते हैं। गर्मी में उन्हें शीत याद आता है, पर शीत आ जाने पर वे कहते हैं, 'गर्मी की ऋतु अच्छी होती है।' गर्मीकाल में वे प्रतिदिन वर्षा की प्रतीक्षा में रहते हैं, परन्तु वर्षा आने पर वे बरसात से तंग आ जाते हैं। इस प्रकार उन्हें हर समय में शिकायत ही शिकायत रहती है। उन्हें कोई भी ऋतु अच्छी नहीं लगती, परन्तु प्रभु प्रेम का कुछ प्रसाद पा लेने पर मुझे तो प्रत्येक ऋतु में अपने प्रभु की ही कोई न कोई प्रतिमा दिखाई देती है। इसलिए गर्मी में मैं सुख से गर्मी का आनन्द लेता हूँ और जाड़े में जाड़े का। वर्षाकाल में मैं खूब बरसात मनाता हूँ और पतझड़ में मैं अपने प्रभु का एक-दूसरा ही सौन्दर्य पाता हूँ। इस तरह मैं हर समय हर ऋतु में अपने प्रभु का दर्शन करता हूँ और देखता हूँ कि प्रत्येक ऋतु अपनी नई-नई प्रकार की रमणीयता के साथ नया-नया प्रभु-सन्देश लाती हुई मेरे पास आ रही है।

मेरे जीवनरूपी संवत्सर में भी इसी प्रकार सब ऋतुएँ आया करती हैं। कभी सुख-सम्पत्ति की घड़ियाँ आती हैं तो कभी दु:ख-दारिद्रय के लम्बे दिन व्यतीत होते हैं। कभी अति कार्य-व्यग्रता का राजसिक समय वर्षों तक चलता है तो कभी काफी समय के लिए शिथिलता और दीर्घ-सूत्रता के दिनों की बारी आती है, पर मैं उन सभी का रसास्वादन करता हूँ। ये सभी रस अपने-अपने समय पर प्राप्त होते हुए मुझे प्रिय लगते हैं। इस प्रकार मैं अपने बाल्यकाल के वसन्त में खूब खेला हूँ, नौ-जवानी की ग्रीष्म के जोशीले दिनों का तथा प्रौढ़ता की बरसात के प्रेमपूर्ण दिनों का आनन्द भी मुझे याद है। आजकल सार्वजनिक जीवन की शरद् और हेमन्त की बहार ले रहा हूँ और देख रहा हूँ कि वार्धक्य की शिशिर अपनी बुजुर्गो, अनुभवपूर्णता और परिपक्वता स्वर्गीय आनन्द के साथ मेरी प्रतीक्षा कर रही है। नि:सन्देह प्रभु की वसन्त ही नहीं किन्तु ग्रीष्म भी रमणीय है, वर्षा और इसके अनन्तर आने वाली शरद् के साथ उसकी हेमन्त तथा शिशिर भी उसी तरह रमणीय हैं।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

अप्राकृतिक, अमानवीय और अनैतिक है समलैंगिक विवाहों की मांग

इस निंदनीय पशुता पूर्ण सोच का घोर विरोध करता है- आर्य समाज

"आर्य समाज प्रारंभ से ही अमानवीय, अनैतिक, असमाजिक कुरीतियों, ढोंग, पाखंड और अंधविश्वासों के विरोध में संघर्ष करता आया है। 21 मार्च 2023 को आर्य समाज के 148वें स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में भव्य आयोजन हुआ, वहां पर भारत के गृहमंत्री श्री अमित शाह जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे और आर्य समाज का लगभग शीर्ष नेतृत्व सहित हजारों अधिकारी, कार्यकर्ता और आर्यजन उपस्थित थे, वहां पर पारित होने वाले 4 प्रस्तावों में एक यह प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पास हुआ था कि भारत सरकार द्वारा जो माननीय सुप्रीम कोर्ट में समलैंगिक विवाह का विरोध करते हुए शपथ पत्र दाखिल किया गया है, आर्य समाज सरकार के इस कदम का स्वागत एवं समर्थन तो करता ही है, साथ में सुप्रीम कोर्ट में अपना पक्ष भी रखेगा, यह प्रस्ताव पारित करता है। इस प्रस्ताव को वहां पर उपस्थित सभी आर्य नेताओं एवं आर्यजनों ने सर्वसम्मति से पास किया था। आर्य समाज अपने नैतिक सिद्धांतों मान्यताओं और परंपराओं की परिपालना के लिए कृत संकल्प है और हमेशा रहेगा। समलैंगिक विवाह किसी भी रूप में हमारी संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों से बिल्कुल भी मेल नहीं खाता। अत: हम इसका घोर विरोध करते हैं और भारत सरकार की इस अच्छी पहल का स्वागत भी करते हैं।"

भारत की गौरवशाली संस्कृति उतनी ही पुरानी है जितना कि मानव जीवन। हमारे यहां इतनी विशाल ज्ञान राशि है कि जिसे एक जीवन में व्यक्ति पूरी तरह से जान भी नहीं सकता। ईश्वर की अमृतमयी वाणी वेद, उपनिषद, दर्शन, स्मृति ग्रन्थ, नीती ग्रंथ, ब्राह्मण ग्रन्थ, रामायण, गीता, महाभारत, ऋषि, मुनियों, सिद्ध संतों की शोध परक लाखों पुस्तकें, और आयुर्वेद चिकित्सा पद्धतियों जैसे महत्वपूर्ण विषयों से जुड़े हुए वैद्यक ग्रंथ आदि आदि।

उपरोक्त समस्त ज्ञान विज्ञान की राशि हमें जीवन जीने की कला ही तो सिखाती है। वेदों पर आधारित हमारे 16 संस्कार हमें पग पग पर एक आदर्श और परिष्कृत जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। और उन्हीं की दिव्य परंपराओं पर चलकर हमारे पूर्वज महान, बलवान, बुद्धिमान, रूपवान, गुणवान आदि विशेषताओं से युक्त अपार साहस और वीरता के धनी होते थे, हमारे महापुरुषों के तपोबल के सामने पाप और पापी भी थर थर कांपा करते थे, क्योंकि उनका वैदिक सिद्धांतों पर आधारित साधना पूर्ण उत्तम जीवन अद्भुत और अनुपम होता था।

भारत की यह तपोभूमि गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनी पर्यंत ऋषि मुनियों सहित मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम, योगीराज श्री कृष्ण, नचिकेता, भक्त पुंडरीक, महर्षि दयानंद सरस्वती आदि महान पुरुषों की जन्मभूमि रही है। लेकिन आजकल पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर देश की युवा पीढ़ी पतन के रास्ते पर बढ़ती जा रही है। आज मानव जीवन के दूसरे गृहस्थ आश्रम विवाह के नाम पर समाज में अलग-अलग तरह की विसंगतियां और विकृतियां पनपती जा रही हैं, जहां एक तरफ बिना शादी विवाह के लिव इन रिलेशन में युवक युवतियां अनैतिक और अमर्यादित तरीके से पति पत्नी के रूप में एक साथ रह रहे हैं। जिसे हमारी न्यायपालिका ने पहले ही स्वीकृति दे रखी है। विवाह संस्कार के विषय में महर्षि दयानंद सरस्वती के अनुसार आर्य समाज की मान्यता है कि युवक युवतियां जातिवाद की दीवारों को तोड़कर अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुरूप जीवन साथी चुनकर विवाह करें और प्रजनन करके ज्ञान से परिपूर्ण संतान उत्पन्न करके राष्ट्र एवं मानव समाज की सेवा के लिए समर्पित करें। शास्त्रोक्त मतानुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को लक्ष्य में रखकर ही गृहस्थ धर्म का पालन करना उचित माना गया है।

किंतु आधुनिक परिवेश में युवा पीढ़ी लिव इन रिलेशन में रहने से भी आगे समलैंगिक संबंधों की स्वीकृति न्यायालय से प्राप्त कर चुकी है। भारत की न्याय पालिका ने 2018 में समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया था। ज्ञात हो कि 7 सितंबर 2018 को, सुप्रीम कोर्ट की 5-जजों की संवैधानिक पीठ ने भारतीय दंड संहिता की धारा 377 के हिस्से को अमान्य कर दिया था, जिससे भारत में समलैंगिकता को कानूनी बना दिया गया था। इस अमानवीय और अप्राकृतिक पशु प्रवृत्ति पर महर्षि दयानंद सरस्वती ने उस समय ही आदिम सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से आपत्ति जताते हुए कहा था कि आजकल आर्यावर्त में कई एक राजा और धनाढ्य, बालकों से भी बुरा काम करते हैं, यह बड़ा आश्चर्य है कि स्त्री का काम पुरुषों से लेते हैं, इनकी तो बुद्धि अत्यंत भ्रष्ट सज्जनों को जाननी चाहिए। महर्षि इस समलैंगिकता जैसे कुकृत्य पर रोष व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि जो लड़के बाजी करते हैं वे तो सुवर और कौवे के जैसे हैं क्योंकि जैसे सुवर व कौवे मल से बड़ी प्रीति रखते हैं और अरुचि कभी नहीं करते, वैसे वे पुरुष भी मल जिस मार्ग से निकलता है उस मार्ग से बड़ी प्रीति रखते हैं, वे मूर्ख पाप ही कमाते हैं।

महर्षि ने जिस कुकृत्य को महामूर्खता और पाप की संज्ञा बहुत पहले दी थी वह मूर्खता तो आज सारी सीमाएं तोड़कर भयानक रूप धारण करती जा रही है। यह सर्व विदित है कि लिव इन रिलेशन और समलैंगिक संबंधों से भी आगे पिछले साल दिल्ली हाईकोर्ट समेत अलग-अलग अदालतों में समलैंगिक विवाह को मान्यता देने की मांग को लेकर याचिकाएं दायर हुई थीं, 14 दिसंबर को सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली हाईकोर्ट में पेंडिंग दो याचिकाओं को ट्रांसफर करने की मांग पर केंद्र से जवाब मांगा था, इन याचिकाओं में समलैंगिक विवाह को मान्यता देने के

- शेष पृष्ठ 6 पर

राष्ट्र सेवा और मानव निर्माण के प्रति समर्पित था महात्मा हंसराज का प्रेरक जीवन

महात्मा हंसराज की जयंती 19 अप्रैल पर विशेष

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रमुख महान शिष्यों में महात्मा हंसराज जी का स्थान अपने आप में अग्रणी है। महर्षि के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने वाले एक प्रसिद्ध भजन की पंक्तियों के अनुसार-

धन्य है तुझको ऐ ऋषि
तूने हमें जगा दिया
सो सो के लुट रहे थे हम
तूने हमें बचा लिया।।
श्रद्धा से श्रद्धानंद ने
सीने पे खाई गोलियां,
हंस हंस के हंसराज ने
तन मन धन लुटा दिया,
धन्य है तुझको ऐ ऋषि
तूने हमें जगा दिया।।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने हेतु अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले, आर्य समाज के शिक्षा सेवा यज्ञ में अनुपम योगदान देने वाले, करुणा और प्रेम की मूर्ति महात्मा हंसराज का जन्म 19 अप्रैल, 1864 ई. को होशियारपुर जिला, पंजाब के बजवारा नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता चुन्नीलाल जी साधारण परिवार से सम्बन्ध रखते थे। हंसराज जी का बचपन अभावों में व्यतीत हुआ था। वे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। केवल 12 वर्ष की उम्र में ही इनके पिता का देहांत हो गया। हंसराज जी की आंरभिक शिक्षा स्थानीय स्कूल से ही प्रारम्भ हुई थी। डिग्री की शिक्षा उन्होंने 'गवर्नमेंट कॉलेज', लाहौर से पूरी की।

महर्षि की प्रेरणा से जागी सेवा की लगन

सन 1885 में जब वे लाहौर में अपने बड़े भाई मुल्कराज के यहाँ रहकर शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, उसी समय लाहौर में महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्संग में जाने का अवसर इन्हें मिला। महर्षि दयानन्द के प्रवचन का युवक हंसराज पर बहुत प्रभाव पड़ा। अब उन्होंने समाज सेवा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। हंसराज जी आवश्यक कार्यों से बचा सारा समय मोहल्ले के गरीब तथा अनपढ़ लोगों की चिट्ठी-पत्री पढ़ने और लिखने में ही लगा देते थे।

शिक्षा के क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान

महर्षि दयानन्द की स्मृति मे एक शिक्षण संस्था की स्थापना का विचार लगातार चल रहा था।

"सन 1885 में जब वे लाहौर में अपने बड़े भाई मुल्कराज के यहाँ रहकर शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, उसी समय लाहौर में महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्संग में जाने का अवसर इन्हें मिला। महर्षि दयानन्द के प्रवचन का युवक हंसराज पर बहुत प्रभाव पड़ा। अब उन्होंने समाज सेवा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। हंसराज जी आवश्यक कार्यों से बचा सारा समय मोहल्ले के गरीब तथा अनपढ़ लोगों की चिट्ठी-पत्री पढ़ने और लिखने में ही लगा देते थे।"

परंन्तु धन का अभाव इनके रास्ते में आ रहा था। उनके बड़े भाई लाला मुल्कराज स्वंय भी आर्य समाज के विचारों वाले व्यक्ति थे। उन्होंने हंसराज के सामने प्रस्ताव रखा कि वे इस शिक्षा संस्था का अवैतनिक प्रधानाध्यापक बनना स्वीकार कर लें। उनके भरण-पोषण के लिए वे हंसराज को अपना आधा वेतन अर्थात तीस रुपये प्रति मास देते रहेगें। व्यक्तिगत सुख के ऊपर समाज की सेवा को प्रधानता देने वाले हंसराज ने सहर्ष ही इसे स्वीकार कर लिया। इस प्रकार 1 जून, 1886 को महात्मा हंसराज 'दयानन्द एंग्लो-वैदिक हाई स्कूल' लाहौर के अवैतनिक प्रधानाध्यापक बन गए। इस समय उनकी आयु 22 वर्ष थी।

मानव सेवा के क्षेत्रा में योगदान

सन 1889 में 'दयानन्द एंग्लो-वैदिक हाई स्कूल' एक कॉलेज बन गया। इस पर भी हंसराज जी अवैतनिक रूप से कार्य करते रहे। उन्होंने सन 1911 तक इस पद पर कार्य किया। इसके बाद ही उन्हें 'दयानन्द कॉलेज प्रंबध समिति' का अध्यक्ष चुन लिया गया। वर्ष 1918 में लोग उन्हें पुन: इस पद पर चुनना चाहते थे, पर महात्मा हंसराज इसके लिए तैयार नहीं हुए। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा समय मानव सेवा को समर्पित कर दिया। 1919 में उन्होंने अमृतसर में 'इंडियन सोशल कांफ्रेंस' की अध्यक्षता की। देश-विदेश के आर्य समाजियों की जो पहली कांफ्रेंस 1927 में भारत में हुई, वे उसके अध्यक्ष भी चुने गए।

मानव सेवा के कीर्तिमान

सन 1922 में हंसराज जी के कार्यकर्ता केरल के 2500 से भी अधिक लोगों को पुन: हिन्दू धर्म में वापस लाये। ये लोग 'मोपला विद्रोह' में बलपूर्वक मुस्लिम बना दिये गये थे। विकट परिस्थितियों के बावजूद भी यह कार्य महात्मा हंसराज के नेतृत्व में एक शिविर लगाकर लाला कौशलचन्द और पंडित मस्तान चन्द ने किया था। सन 1895 में बीकानेर में आये भीषण अकाल के दौरान दो वर्षों तक बचाव व सहायता का कार्य किया और 'ईसाई मिशनरियों' को सेवा के छद्मवेश में पीड़ित जनता का धर्म-परिवर्तन करने से रोका। लाला लाजपतराय इस कार्य में अग्रणी रहे। जोधपुर के अकाल में लोगों की सहायता हेतु 1400 अनाथ बच्चे आर्य अनाथालयों में पालन-पोषण के लिए लाये गए।

महान राष्ट्रभक्त

महात्मा हंसराज एक महान राष्ट्रभक्त थे, परंतु 'असहयोग आंदोलन' के समय उन्होंने डी.ए.वी. कॉलेजों को बन्द करने का घोर विरोध किया था। उनका कहना था कि इन कॉलेजों पर न तो विदेशी सरकार का कोई नियंत्रण है और न ही ये सरकार से किसी प्रकार की सहायता लेते हैं। महात्मा हंसराज जी ने पूरा जीवन महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं के अनुसार जहां मानव निर्माण, समाज सेवा और परोपकार के लिए समर्पित किया, वहीं उन्होंने समाज में फैले अंधविश्वास और जातिवाद का भी प्रबल विरोध किया और छुआ छूत, भेदभाव को हिन्दू धर्म की उन्नति के मार्ग की बहुत बड़ी बाधा माना। उन्होंने शिक्षा प्रसार के क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान दिया था। अपनी समाज सेवा, कर्तव्यनिष्ठा की भावना और शिक्षा के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान करने वाले महात्मा हंसराज का 15 नवम्बर, सन 1938 ई. में देहांत हुआ।

स्वास्थ्य संदेश

नर्वस सिस्टम सम्बन्धी रोग एवं एक्यूप्रेसर द्वारा उपचार

आज दुनिया में कई लोग ऐसे रोगों से पीड़ित हैं, जिनसे उनके शरीर के कुछ अंग अपना कार्य करना बन्द कर देते हैं। ये रोग मुख्यत: मस्तिष्क (Brain), स्नायु संस्थान (nervous system) तथा मांसपेशियों (muscles) में कुछ विकार आ जाने के कारण होते हैं।

रोगों के लक्षण: रक्तसंचार विकार (vascular disorders), संक्रमण (infections), संरचनात्मक विकार (structural disorders), कार्यात्मक विकार (functional disorders) तथा अंगों में पतन आना (degenerations) इत्यादि । इन संस्थानों से संबंधित विभिन्न बीमारियां इस प्रकार हैं:

i- लकवा-पक्षाघात (paralysis & stroke, facial paralysis & bell's)
ii- मल्टीपल सलेरोसिस (multiple sclerosis)
iii- मसकुलर डिस्ट्रोफी (muscular dystrophy)
iv- मायोपैथी (myopathy)
v- सेरेब्रल पलसी (cerebral palsy)
vi- पारकिन्सन डसीज (parkinson's disease)
vii- पोलियो (polio-poliomyelitis)
viii-मिरगी-मूर्छा (epilepsy)

लकवा नर्वस सिस्टम का एक ज्यादा गम्भीर रोग है।

लकवा-पक्षाघात (paralysis-stroke, facila paralysis-bell's palsy)

शरीर में नर्वस सिस्टम के एक या अनेक तन्तुओं की संचालन शक्ति का शिथिल पड़ जाना अर्थात रुक जाना, पूर्णत: क्षीण हो जाना लकवा कहलाता है। लकवा मस्तिष्क में भलीभांति रक्त संचार न होने तथा मस्तिष्क, रीढ़ की हड्डी तथा स्नायु-संस्थान में किसी विकृति पैरा होने के कारण होता है। पक्षाघात के कारण शरीर पर इसका कितना प्रभाव पड़ता है वह इस तथ्य पर निर्भर करता है कि मस्तिष्क तथा स्नायुसंस्थान का कौन सा भाग इससे कितना प्रभावित हुआ है। यहां यह समझ लेना भी आवश्यक है कि मस्तिष्क का बायां भाग शरीर के दाहिने भाग को नियंत्रित करता है तथा इसी प्रकार मस्तिष्क का दायां भाग शरीर के बाएं भाग को संचालित करता है।

लकवा कई प्रकार का होता है यथा-

शरीर के आधे भाग का लकवा (hemiplegia-paralysis of one side of the body): इसमें शरीर के आधे भाग, दाएं या बाएं तरफ के अंग अपना कार्य करना बंद कर देते हैं। इसका प्रभाव एक तरफ के हाथ, पैर, आवाज तथा आधे मुख मण्डल पर पड़ता है।

एकांग का लकवा (monoplegia-paralysis of only one limb or part): इसमें केवल एक हाथ और एक पैर पर प्रभाव पड़ता है। इस रोग में रोगी इच्छानुसार हाथ तथा पैर को हिला नहीं पाता।

पूर्णांग का लकवा (quadriplegia diplegia, paralysis of corresponding parts of both sides of the body): इसमें व्यक्ति के दोनों हाथ और दोनों पैर बेकार हो जाते हैं अर्थात शरीर के दोनों तरफ के भाग रोगग्रस्त हो जाते हैं।

साभार- सहज उपचार, पुस्तक से

-क्रमशः अगले अंक में...

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में

जहांगीर पुरी दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर संपन्न हुआ वेद प्रचार

पिछले सात दिनों में अलग-अलग ब्लाकों, पार्कों, चौराहों और खुले स्थानों पर पहुंची वेद प्रचार रथ यात्रा

महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज एक विश्व व्यापी आंदोलनकारी संगठन है। ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध मानव समाज में जागरूकता पैदा करना, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना से लोगों को जोड़कर उन्हें सुपथ पर अग्रसर करना, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों से सबको परिचित कराने के कार्यक्रमों का आयोजन करना ये आर्य समाज की प्राचीन परंपरा रही है। आज देश की युवा पीढ़ी जो पथ भ्रमित हो रही है, नशे की लत में पड़कर अपने शरीर, धन और परिवार को बर्बाद कर रही है, अकर्मण्यता के प्रभाव में संस्कार विहीन होकर अपराधी बनती जा रही है। ऐसे युवाओं को सही मार्ग दिखाने का कार्य आर्य समाज लगातार सफलता पूर्वक कर रहा है।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को लेकर 2 वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में दिल्ली में 4 मास तक निरंतर वेद प्रचार रथयात्रा अभियान दिल्ली के कोने कोने में पहुंच रहा है। इस प्रचार अभियान में यज्ञ, भजन और प्रवचनों के कार्यक्रम लगातार चल रहे हैं। हर आयु वर्ग के लोग अपने घरों से बाहर निकल कर आर्य समाज के कार्यक्रमों में भाग ले रहे हैं। यज्ञ में आहुति दे रहे हैं, भजन और प्रवचनों से लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

पिछले सप्ताह वेदप्रचार रथयात्रा दिल्ली के जहांगीरपुरी क्षेत्र में अलग-अलग ब्लाकों में, चौंक चौराहों पर, पार्कों में और खुले स्थानों पर पहुंची। जहां पर आर्य समाज के प्रचारकों ने पूरी शक्ति के साथ वेद प्रचार किया और सभी लोगों ने इसकी बहुत प्रशंसा की। यह प्रचार अभियान लगातार चलता रहेगा, सभी आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों से आग्रह है कि वे अपने क्षेत्र में वेद प्रचार रथयात्रा का स्वागत करें और कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर इस जन जागरण अभियान को सफल बनाने में अपने और अपने आर्य समाज की ओर से पूरा योगदान दे।

युवा पीढ़ी को नशामुक्त बनाओ, यौवन बचाओ, रिश्ते बचाओ, गले लगाओ, मोटा अन्न प्रयोग में लाओ, पर्यावरण को शुद्ध बनाओ, महिला सशक्तिकरण और आर्य समाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने एवं महर्षि की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का अभियान सफलता पूर्वक बढ़ रहा है आगे

महात्मा हंसराज जी की जयंती पर समर्पण दिवस

को संबोधित किया। डॉ. पूनम सूरी जी ने आर्य जगत और आर्य हेरिटेज पुस्तक का विमोचन भी किया। प्रोफेसर सोमनाथ सचदेव कुलपति कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हरियाणा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी को आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री पूनम सूरी जी ने अपने कर कमलों द्वारा विशिष्ट सम्मान से सम्मानित किया। एम. एल. शेखरी उपप्रधान डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति को प्रधान पूनम सूरी जी के द्वारा आजीवन उपलब्धि सम्मान/जीवनकाल उपलब्धि सम्मान से अलंकृत किया गया।

शिक्षा के क्षेत्र के साथ-साथ डी.ए.वी. संस्था सामाजिक पुनरुत्थान के कार्यों में भी अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देती रही है, डी.ए.वी. विद्यालय के प्रमुख/प्रधानाध्यापकों की इन कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षा और सामाजिक कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान के लिए 4 प्रधानाध्यापकों को अभिनंदित किया गया। डी.ए.वी. में इन कार्यों की परंपरा अविरल प्रवाहित है। डी.ए.वी. संस्थाएं सामाजिक कार्यों के लिए लगातार प्रयासरत है। स्वामी विवेकानंद सरस्वती जी कुलाधिपति गुरुकुल प्रभात आश्रम ने अपने आशीर्वचन दिए।

महात्मा हंसराज के तपस्वी जीवन पर विशेष प्रस्तुती

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण महात्मा हंसराज जी के जीवन चरित्र को उभरता तात्कालिक परिस्थितियों के बीच देशभक्ति की भावना के साथ-साथ एक सुदृढ़समाज तथा सुदृढ़ संकल्प व समर्पण भाव की नींव रखता कार्यक्रम डांस बैले प्रस्तुत किया गया। जिसमें डी.ए.वी. हरिद्वार, डी.ए.वी. देहरादून व बी.एम. डी.ए.वी., हरिद्वार के 1000 विद्यार्थियों ने मंच पर एक साथ उत्साहपूर्वक नृत्य व नाटक प्रस्तुत किया। जिसमें महात्मा हंसराज जी के जीवन संघर्ष, सामाजिक सेवा, देशभक्ति और स्वामी दयानंद जी के सपनों को साकार करने के लिए महात्मा हंसराज जी के समर्पण को प्रस्तुत किया। नृत्य और नाट्य का ऐसा सुंदर सामंजस्य छः मंचों पर एकसाथ प्रदर्शित किया गया। हरिद्वार वासियों के लिए महात्मा हंसराज समर्पण दिवस के भव्य आयोजन को देखने का यह पहला सुनहरा अवसर था। कार्यक्रम की भव्यता ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा परिसर गूंज उठा। कार्यक्रम का समापन शांति पाठ से हुआ। सभी प्रतिष्ठित अतिथियों और अभिभावकों ने रात्रिभोज का आनंद लिया। उन्होंने कार्यक्रम की भूरी-भूरी सराहना की।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल राष्ट्रीय शिविर का आयोजन

दिनांक 01 से 15 जून 2023

स्थानः- गुरुकुल विश्वभारती भैयापुर लाढ़ौत रोड, रोहतक- 124001 (हरियाणा)

शिविराध्यक्षः- स्वामी देवव्रत सरस्वती

इस शिविर में शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी को शारीरिक और बौद्धिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा।

प्रवेश शुल्कः उप व्यायाम व व्यायाम शिक्षक 1000/- रुपये, शाखानायक 800/- रुपये।

आवश्यक सामानः खाकी हाफ पैण्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद मोजे व जूते, लाठी, नोटबुक, अन्य दैनिक प्रयोग में आने वाला आवश्यक सामान। पाठय पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

शिविर में अनुशासन का पालन अनिवार्य होगा। अनुशासन न मानने वाले शिविरार्थी को शिविर से पृथक् भी किया जा सकेगा।

अपने साथ कीमती सामान न लायें।

सम्पर्क करें

आचार्य हरिदत्त उपाध्याय	स्वामी देवव्रत सरस्वती	सत्यवीर आर्य
शिविर संयोजक	शिविराध्यक्ष	प्रधान संचालक
	9868620631	9417489461
आचार्य नन्दकिशोर		प्रवीण शास्त्री स्वामी
शिविर प्रबन्धक		प्रधान व्यायाम शिक्षक
9466436220		9467071733

गुरुकुल शिक्षा पद्धति का विशिष्ट केन्द्र गुरु विरजानंद संस्कृतकुलम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित विभिन्न सेवा प्रकल्पों में गुरु विरजानंद संस्कृतकुलम का अपना विशेष स्थान है। इस गुरुकुल में पढ़ने वाले नन्हे-मुन्ने बच्चे ऋषि कुमारों की तरह 5 वर्ष की अवस्था से ही अपने जीवन को तप-त्याग और साधना से कुंदन बना रहे हैं। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये सब केवल संस्कृत भाषा में ही पठन-पाठन, अपनी दिनचर्या और सारे व्यवहार करते हैं। इनका पढ़ना-लिखना, खेलना-कूदना, बोलना-चालना, नहाना-धोना, खाना-पीना, सोना-जागना सब संस्कृत भाषा में होता है। ये पूरी तरह संस्कृतमय ही जीवन जीते हैं। वेदों के मंत्र, संस्कृत साहित्य के श्लोक और छोटे-छोटे भाषण भी संस्कृत में धारा प्रवाह बोलते हैं।

इस महान गुरुकुल की स्थापना के पीछे सभा का उद्देश्य यह है कि वर्तमान परिस्थितियों में संस्कृत भाषा की उपेक्षा जग जाहिर है। ऐसे में हमारे वेद-उपनिषद, दर्शन, रामायण, गीता, स्मृतिग्रंथ, नीति वचन और ऋषि-मुनियों के संदेश-उपदेश जो कि सब संस्कृत भाषा में हैं, उन्हें पढ़ने-पढ़ाने का कार्य कौन करेगा? वेद मंत्रों की व्याख्याएं कैसे संभव होगी? इसलिए हमारा प्रयास यह है कि हमारे पास संस्कृत के ऐसे सुयोग्य विद्वान होने चाहिए जो वेदों का सांगोपांग अध्ययन-अध्यापन कर सकें। इसके लिए सभा द्वारा संचालित इस गुरुकुल में पढ़ने वाले बच्चों के लिए सुयोग्य आचार्यों की व्यवस्था की गई है। जो इन ऋषि कुमारों को माता-पिता के रूप में अपने बच्चों की तरह उत्तम पालन-पोषण के साथ इनका सर्वांगीण विकास कर रहे हैं। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए ये बच्चे भारत के भविष्य हैं, ये बच्चे बड़े होनहार हैं, देश के कर्णधार हैं, वैदिक संस्कृति का भविष्य हैं, विश्व की आशा है, संस्कृत, संस्कृति और संस्कारों के संपोषक बनने की राह पर अग्रसर हैं।

> "दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की शिक्षा सेवा योजनाओं में गुरु विरजानंद संस्कृतकुलम का अपना प्रमुख स्थान है। दिल्ली के एल ब्लाक, हरि नगर में गतिशील इस इस गुरुकुल के विद्यार्थी बड़े होनहार हैं, सुयोग्य आचार्यों के कुशल निर्देशन में वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को धारण कर रहे हैं, इनकी संपूर्ण दिनचर्या और शिक्षा-दीक्षा में केवल संस्कृत भाषा का ही प्रयोग होता है, इनका संस्कृत में परस्पर वार्तालाप, वेदमंत्रों का पाठ, संस्कृत साहित्य के श्लोक और संस्कृत में ही गीत संगीत की प्रस्तुति सहज ही मन को मोह लेती है। इन बटुक विद्यार्थियों के समस्त क्रिया कलापों में प्राचीन गुरुकुलीय परंपरा के दर्शन होते हैं। आइए, इन ऋषि कुमार ब्रह्मचारियों को अपना आशीर्वाद दें, जब कभी समय मिले गुरुकुल में परिवार सहित जाएं, इनकी आदर्श दिनचर्या को स्वयं देखें और अपने बच्चों को भी दिखाएं, आप इनके साथ पर्व त्यौहार भी मना सकते हैं, जिससे इनके भीतर आर्य समाज परिवार के प्रति आत्मीयता का भाव प्रगाढ़ होवे और ये संस्कृत के सुयोग्य विद्वान बनकर वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के संरक्षण और संवर्धन में अहम योगदान देने में सफल होवें।"

हमारी भावना और कामना

हम सबमें से ज्यादातर लोग अपने बच्चों को तो गुरुकुल में नहीं पढ़ा पाते, लेकिन जो बच्चे गुरुकुलों में पढ़कर महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाएं, वेद-उपनिषद आदि समस्त ग्रथों सहित आर्य समाज की मान्यता, सिद्धांत और परंपराओं को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित हैं, उनके सहयोगी तो हम अवश्य ही बन सकते हैं।

1- आप स्वयं संस्कृतकुलम में बच्चों की दिनचर्या को देखें, उनके संस्कृत में वार्तालाप को सुनें, उन्हें आशीर्वाद देवें।

2- इन बच्चों को आवास, भोजन, वस्त्र शिक्षा से जुडी संपूर्ण सामग्री, चिकित्सा और अन्य इनकी आवश्यकताओं के अनुरूप साधन-सुविधाएं नि:शुल्क प्रदान की जाती हैं।

प्रत्येक विद्यार्थी के उज्ज्वल भविष्य के लिए उसकी शिक्षा के प्रारंभ से लेकर 18 वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए सभा के द्वारा 1000 रू. प्रतिमाह धनवृद्धि योजना में जमा किए जाते हैं। इस राशि से विद्यार्थी जब युवावस्था में पहुंचेंगे तो एक महान् विद्वान् बनकर निश्चिंत होकर आगे बढ़ते जाएंगे। इस महान् सेवाकार्य में 70,000/- रू. प्रतिमाह से अधिक खर्च होता है। इसके लिए आप मासिक दानी सहयोगी सदस्य बनकर एक बच्चे की शिक्षा के लिए 1500/- रू. प्रतिमाह का सहयोग देकर पुण्य अर्जित करें।

कृपया अपनी दान राशि सीधे निम्नांकित बैंक खाते में जमा करायें-
Delhi Arya Pratinidhi Sabha - Guru Virjanand Sanskrit Kulam
Doner's account A/c No : 914010014633178
IFSC CODE : UTIB0002193 Axis Bank Connaught Place

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित

दयानन्द विद्या निकेतन, देवघर, झारखण्ड में नवनिर्माणाधीन भवन का निरीक्षण कार्य संपन्न

दिनांक 17-04-2023 को अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ दिल्ली के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी, उपाध्यक्ष श्री विनय आर्य जी, आचार्य श्री शरद चन्द्र जी एवं श्री अरविंद वाजपेयी जी दयानंद विद्या निकेतन देवघर, झारखण्ड के निर्माणाधीन भवन का निरीक्षण करते हुए। इस अवसर पर आपने क्षेत्रीय लोगों से भी विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श किया।

आर्य समाज नारायणा विहार के 50वें वार्षिकोत्सव पर यज्ञ, भजन एवं वेद प्रवचनों का कार्यक्रम संपन्न

10-16 अप्रैल 2023 तक आर्य समाज नारायणा विहार के 50वें वार्षिकोत्सव पर यज्ञ, भजन और सातदिवसीय वेद कथा का कार्यक्रम संपन्न हुआ। आचार्य श्री श्याम देव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में प्रतिदिन प्रात: यज्ञ, सायंकाल 6-7 बजे तक भजनोपदेशक श्री नेत्रपाल आर्य जी के मधुर भजन एवं 7-8 बजे तक आचार्य श्री अनिल शास्त्री जी द्वारा वैदिक सत्संग हुआ। उन्होंने ऋग्वेद -2/21/6 के 'इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चितिम्

दक्षस्य सुभगत्वस्मे। पोषं रयीणामरिष्टं तनूनाम् स्वाद्या वाच: सुदिनत्वमह्नाम।।' को आधार बनाकर सात दिनो तक मानव जीवन को उत्कृष्ट बनाने हेतु अच्छे प्रवचन दिए। प्रसंग के अनुसार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यो का प्रचार भी वे प्रति दिन प्रवचनों में करते रहे। रविवार, 16-4-2023 को कार्यक्रम का समापन हुआ। नारायणा क्षेत्र के तीन व्यक्तियों, योग गुरु श्रीमती परम जीत कौर जी, श्रीमान विजय मनसुखानी जी और श्री अजय वीर सिह जी को शाल भेंट कर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात प्रधान जी ने सबका धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

-करण सिंह तंवर, प्रधान

Nebulae, Suns and Solar Systems

Cosmos or the well-set or regular creation starts with appearance of various nebulae or the unshapely huge round balls of fire, rotating, round their axes. They have been called ' in the Vedas as Virat in the Purush hymns and And or Brahmand at some other places in them. In process of time, probably on account of tremendous motions in them, but certainly in keeping with the Divine plan of things, their outer parts shoot out from them and get fixed in space right round them, keeping to their assigned positions through the force of gravitation, nebulae (unshapely sun balls) attracting the shot out parts towards them, and vice versa.

In keeping with the Divine universal order (Rit or Ridh),. these parts keep to their well-defined orbits right round various nebulae and begin revolving around them and yet keep rotating on their own axes. They have been named Grahas or planetc, from whom in process of time, again, due to some such same cause and plan, parts shoot forth in space, leading to the formation of Upagrahas or satellites, keeping to their assigned positions due to the mutual force of gravitation and revolving around their Grahas or planets. This ultimately results in various nebulae rounding off to the shapely and symmetrical suns, with their planets and satellites well-trenched in their shapes, positions and orbits, planets with their satellites revolving around tne suns.. A sun with its planets and satellites is called a solar system or Saur Mandal. The universe has countless number of such solar systems.

It may, by the way, be pointed out here that the Vedic references about what is stated above would be given under the next heading. Here, however, same Vedic references, stating that there are several suns and planets and consequently several solar systems, are being given:—

1. 'The rays of these (suns) spread straightward, may be below or may be above. They do bear vitamins. They are full of great powers. The self-radiant (suns) are near (not far off). The Prime Mover (Divinity) is beyond'—Yajurved, _33.74; Rigved, 10.129.5

2.'What are these three kinds of planets (extensive .habitable regions in this or our, etherial and radiant solar systems), of them, certainly the earth is the best' ("lama yaasthisrah prithhiveeh thaasaam ha bhoomiruththamaa"—Atharvaved, 6,21.1).

3. 'All the three kinds (in this or our, etherial and radiant solar systems) of planets (extensive habitable regions) be well-based (well-positioned)' ("Thisrah prithhiveeradhho astu vishhvaah"—Atharvaved; 8.4.11).

पृष्ठ 2 का शेष

अप्राकृतिक, अमानवीय और अनैतिक है समलैंगिक विवाहों की मांग

निर्देश जारी करने की मांग की गई थी।

इस विषय पर केंद्र सरकार ने कहा था कि समलैंगिक विवाह को अनुमति देने न देने का अधिकार सुप्रीम कोर्ट को नहीं, जानकारी के अनुसार समलैंगिक विवाह पर सुप्रीम कोर्ट में मंगलवार से सुनवाई होगी। ये सुनवाई पांच जजों की संवैधानिक बेंच करेगी। लेकिन इससे पहले केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में एक और हलफनामा दायर कर सभी याचिकाओं को खारिज करने की मांग की है, साथ ही ये भी कहा कि इस पर फैसला लेने का अधिकार अदालत को नहीं है।

पुरुष से पुरुष और स्त्री से स्त्री के विवाह की कानूनी मांग करने वाले और इस अमानवीय मांग पर माननीय न्यायालय द्वारा विचार किए जाने से पूर्व मानव समाज को भी यह विचार करना चाहिए कि यह अप्राकृतिक विवाह सफल कैसे हो सकता है। यह प्रवृत्ति तो पशुओं में भी नहीं है। विवाह का मतलब तो यही होता है कि अपने अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार स्त्री और पुरुष विवाह करके संतान उत्पन्न करें और उन्हें पढ़ा लिखाकर सुयोग्य बनाएं और राष्ट्र के सभ्य नागरिक और सेवा भावी बनाकर मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें। अब प्रश्न ये उठता है कि एक पुरुष दूसरे पुरुष से अथवा एक महिला दूसरी महिला से विवाह करके क्या संतान उत्पन्न कर सकते हैं? अगर नहीं, तो फिर यह कैसा विवाह और कौन सी विवाह की मान्यता?

आर्य समाज प्रारंभ से ही अमानवीय, अनैतिक, असमाजिक कुरीतियों, ढोंग, पाखंड और अंधविश्वासों के विरोध में संघर्ष करता आया है। 21 मार्च 2023 को आर्य समाज के 148वें स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में भव्य आयोजन हुआ, वहां पर भारत के गृहमंत्री श्री अमित शाह जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे और आर्य समाज का लगभग शीर्ष नेतृत्व सहित हजारों अधिकारी, कार्यकर्ता और आर्यजन उपस्थित थे, वहां पर पारित होने वाले 4 प्रस्तावों में एक यह प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पास हुआ था कि भारत सरकार द्वारा माननीय सुप्रीम कोर्ट में समलैंगिक विवाह का विरोध करते हुए शपथ पत्र दाखिल किया गया है, आर्य समाज सरकार के इस कदम का स्वागत एवं समर्थन तो करता ही है, साथ में सुप्रीम कोर्ट में अपना पक्ष भी रखेगा, यह प्रस्ताव पारित करता है। इस प्रस्ताव को वहां पर उपस्थित सभी आर्य नेताओं एवं आर्य जनों ने सर्वसम्मति से पास किया था। आर्य समाज अपने नैतिक सिद्धांतों मान्यताओं और परंपराओं की परिपालना के लिए कृत संकल्प है और हमेशा रहेगा। समलैंगिक विवाह किसी भी रूप में हमारी संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों से बिल्कुल भी मेल नहीं खाता अत: हम इसका घोर विरोध करते हैं और भारत सरकार के इस अच्छी पहल का स्वागत भी करते हैं। **-संपादक**

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद सत्य भाषण-असत्य भाषण-विश्वास-अविश्वास

6-सत्य भाषण

आत्मा के अन्दर बसा
जो विचार हो नित्य ।
दोष असम्भव आदि से
रहित वही है 'सत्य' ।।11।।

7-मिथ्या भाषण

जो होवे संसार में
सत्य वचन-विपरीत ।
'मिथ्या भाषण' है वही,
उससे बचिए मीत ।।12।।

8-विश्वास

मूल अर्थ, अरुफल सदा
जिसमें नित्य निवास ।
कहते हैं संसार में
उसको ही 'विश्वास' ।।13।।

9-अविश्वास

उल्टा जो विश्वास से
जिसका तत्व न अर्थ ।
'अविश्वास' वह जानिए,
उसका करना व्यर्थ ।।14।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

लोकैषणा से दूर

यह किसका प्रकाश है?

कीर्ति की चाहना कोई बुरी बात नहीं, परन्तु यश की चाहना और बात है और मान-प्रतिष्ठा की भूख दूसरी बात है। जब नेता लोग प्रतिष्ठा पाने के लिए व्याकुल हो जाते हैं तो सभा-संस्थाएँ पतनोन्मुख हो जाती हैं। नेताओं का व्यवहार कैसा होना चाहिए यह निम्न घटना से सीखना चाहिए।

पण्डित श्री गंगाप्रसादजी उपाध्याय वैदिक धर्म प्रचार के लिए केरल गये। चैंगन्नूर नगर में उनके जलूस के लिए लोग हाथी लाये। पूज्य उपाध्यायजी ने हाथी पर बैठने से यह कहकर इन्कार कर दिया कि यहाँ तो लोग निर्धनता के कारण ईसाई बन रहे हैं और आप मुझे हाथी पर बिठाकर यह दिखाना चाहते हैं कि मैं बड़ा धनीमानी व्यक्ति हूँ या मेरा समाज बड़ा साधन-सम्पन्न है। लोकैषणा से दूर उपाध्यायजी पैदल चलकर ही नगर में प्रविष्ट हुए।

पूज्य स्वामी आत्मानन्दजी महाराज ने देश विभाजन से पूर्व एक पुस्तक लिखी। उसके प्रकाशनार्थ किसी धनी-मानी सज्जन ने दान दिया। स्वामीजी के गुरुकुल से वह पुस्तक प्रकाशित कर दी गई। उसमें दानी का चित्र दिया गया, लेखक का चित्र न दिया गया। एक ब्रह्मचारी पुस्तक लेकर महाराज के पास लाया और कहा, ''विद्वान् का महत्त्व नहीं, धनवान् का है। आपका चित्र क्यों नहीं प्रकाशित किया गया?''

गम्भीर मुद्रा वाले वीतराग आत्मानन्दजी ने पुस्तक हाथ में लेकर उसके पृष्ठ उलट-पुलटकर कहा, ''यह सारी पुस्तक किसका प्रकाश है?''

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्य सन्देश

क्या आपको डाक प्राप्त करने में कोई असुविधा हो रही है?

क्या आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा?

क्या आप आर्य सन्देश साप्ताहिक को ऑनलाइन पढ़ना चाहते हैं?

क्या आप आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित करने में सहयोग करना चाहते हैं?

क्या आप देश-विदेश में रहने वाले अपने मित्रों-दोस्तों, रिश्तेदारों को भी आर्य सन्देश पढ़वाना चाहते हैं?

यदि हां! तो

आज ही अपने मोबाइल में टेलिग्राम एप्प डाउनलॉड करें और नीचे दिए लिंक पर क्लिक करके आर्य सन्देश ग्रुप जॉइन करें
https://t.me/aryasandesh110001

- सम्पादक

अधिकांश रूप से यह अनुभव किया जाता है कि स्थान विशेष पर या समय विशेष पर वैदिक सूक्तियों और प्रेरक सुभाषितों की आवश्यकता होती है। जैसे स्कूल में, गौशाला में, आश्रमों में, खेल के स्थानों पर, पर्व, उत्सव, सम्मेलन, महासम्मेलन, प्रभात फेरी, शोभायात्रा आदि में प्रेरणाप्रद प्रमाणिक वाक्य लिखने के लिए हम समय-समय पर विचार करते हैं। किन्तु उस समय पर हमें वह उपयोगी मैटर मिल नहीं पाता। अतः आर्य संदेश के सुधी पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए शास्त्रोक्त वचनों के प्रचार-प्रसार हेतु हमने एक नियमित कालम प्रारम्भ किया है। जिसमें हर बार कुछ सूक्तियां निरंतर प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा। -संपादक

वैदिक सूक्तियां

19- मर्यादा सम्बन्धी-

सुगो ही वो अर्यमन्मित्र पन्था

-ऋ०-02-27-06

(हे मानव! वेदोक्त सत्य मार्ग पर चलो।)

20- संतानों से सम्बंधित-

उप नः सूनवो गिरः श्रन्वंत्वमृतस्य ये।
सुमृडीका भवन्तु नः

-यजु०-33-77

(ब्रह्मचर्य और वेदवाणी को सुनकर संतान माता-पिता के लिए अत्यंत हितकारी होव।)

21- मात-पिता और आचार्य (गुरु)

मातृमान पितृमान आचार्यवान पुरुषो वेद -शतपथ ब्राह्मण

(हे पुरुष! माता-पिता और आचार्य के आचरण को ग्रहण कर।)

22- कर्तव्य पालन

स्वाक्तम मित्रो अकरयम

-अथर्व०-07-30-01

(हे मानव! सदा शुभकर्म करो जिससे सभी पदार्थ और विद्वानजन उसके उपकारी होवे।)

महर्षि दयानन्द की प्रेरक शिक्षाएं

संस्कृत ही सभी भाषाओं का मूल है- सब देश भाषाओं का मूल संस्कृत है। संस्कृत जब बिगड़ती है तब अपभ्रंश कहाता है। फिर अपभ्रंश से देश भाषाएं होती हैं। जैसे कि 'घट' शब्द से घड़ा, 'घृत' शब्द से घी, 'दुग्ध' शब्द से दूध, 'नवीन' शब्द से नैनू, 'अक्षि' शब्द से आंख, 'कर्ण' शब्द से कान, 'नासिका' शब्द से नाक, 'जिह्वा' शब्द से जीभ, 'मातर' शब्द से मादर, 'यूयं' शब्द से यू (You), 'वयं' शब्द से वी (We), 'गूढ़' शब्द से गौड (God), इत्यादि जान लेना।

राजा वंशक्रमानुगत न होकर निर्वाचित होना चाहिए- यह सभापति या सभाध्यक्ष राजा वंशक्रमानुगत न होकर 'निर्वाचित' या प्रजाजन (जनता) द्वारा इस पद पर नियुक्त होना चाहिए।

-ऋग्वेद भाष्य

राजा प्रजा धर्म विषय- ''.....आर्यों की यह एक बात बड़ी उत्तम थी कि जिस सभा वा न्यायाधीश के सामने अन्याय हो, वह प्रजा का दोष नहीं मानते थे, किन्तु वह दोष सभाध्यक्ष, सभासद् और न्यायाधीश का ही गिना जाता था। इसलिए वे लोग सत्य न्याय करने में अत्यन्त पुरुषार्थ करते थे, जिससे आर्यावर्त्त के न्यायघर में कभी अन्याय नहीं होता था। और जहां होता था वहां उन्हीं न्यायाधीशों को दोष देते थे। यही सब आर्यों का सिद्धान्त है। अर्थात् इन्हीं वेदादि शास्त्रों की रीति से आर्यों ने भूगोल में करोड़ों वर्ष राज्य किया है, इसमें कुछ सन्देह नहीं।''

॥ इति संक्षेपतो राजप्रजाधर्मविषयः॥22॥ स्रोत-ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

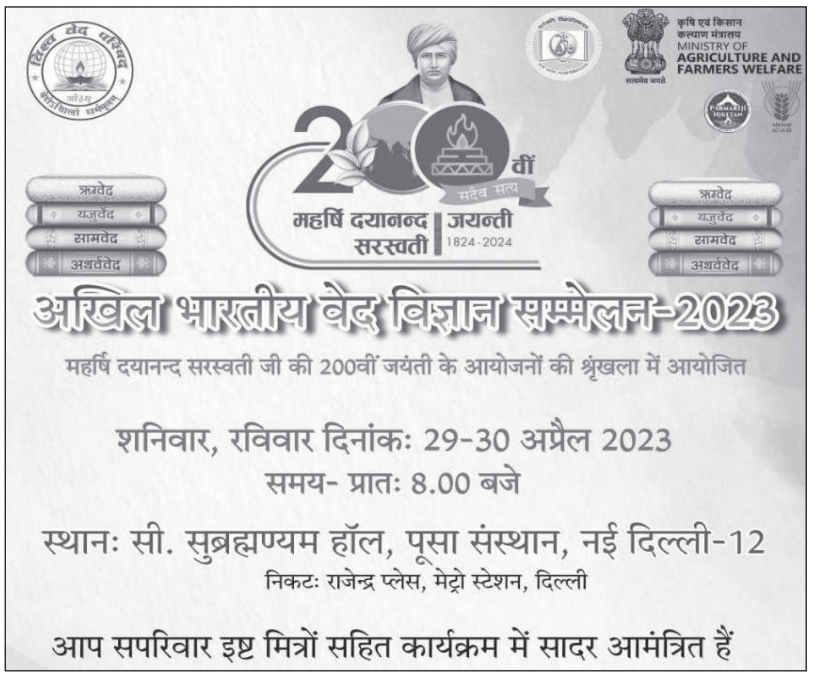

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल राष्ट्रीय शिविर का आयोजन

दिनांक 03 से 11 जून 2023

स्थानः- आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, अपोजिट सिविल हॉस्पिटल, नजदीक पी.डब्लू.डी. रेस्ट हाउस पानीपत-132103

महर्षि दयानन्द की 200वीं जन्म शताब्दी पर शिविर के विशेष आकर्षण

शूटिंग, धनुर्विद्या, मार्शल आर्ट्स एवं आर्य जगत के जाने-माने विद्वानों द्वारा बौद्धिक उद्बोधन

उदघाटनः शनिवार 3 जून 2023 सायं 05:00 से 07:00 बजे तक

समापनः रविवार 11 जून 2023 प्रातः 10:00 से दोपहर 01:00 बजे तक

- 3 जून दोपहर 12 बजे तक पहुंच जाएं
- आयु कम से कम 14 वर्ष।
- टार्च, लाठी, मग, साबुन साथ लाएं।
- शिविर का गणवेश 2 जोड़ी सफेद सलवार, कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद, पी.टी. शूज, सफेद मोजे व पहनने के उचित कपड़े साथ लाएं।
- कोई भी शिविरार्थी मोबाइल फोन, कीमती वस्तु व अधिक पैसा साथ न लाएं।
- शिविर शुल्क 350/- प्रति शिविरार्थी होगा। पाठ्य पुस्तकें शिविर में दी जाएंगी।
- सभी शिविरार्थी अपना नामाकंन 01 जून 2023 तक करा लें।

सम्पर्क करें

9672286863, 9810702762, 9910234595

शोक समाचार

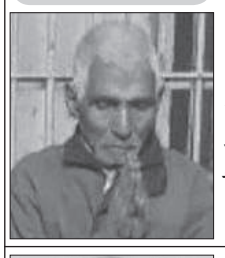

श्री ईश्वर दास जी का निधन

आर्य समाज दीवान हाल चांदनी के समर्पित सेवक श्री ईश्वर दास जी का अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से निगम बोध घाट पर किया गया।

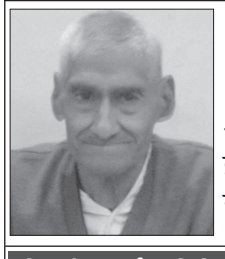

श्री सत्यवीर आर्य जी का निधन

आर्य समाज नत्थूपुरा दिल्ली के प्रधान श्री सत्यवीर आर्य जी का लंबी बीमारी के चलते उपचार के दौरान द्वारका हॉस्पिटल में निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार कादीपुर श्मशान घाट में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

सोमवार 24 अप्रैल, 2023 से रविवार 30 अप्रैल, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 26-27-28 अप्रैल, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 26 अप्रैल, 2023

ओ३म्

आर्य समाजों की विभिन्न गतिविधियों से सम्बन्धित रजिस्टर उपलब्ध हैं

- आर्य समाज सदस्यता रजिस्टर
- आर्य समाज सदस्यता शुल्क (चन्दा) रजिस्टर
- भवन आरक्षण रजिस्टर
- आर्य वीर दल रजिस्टर
- आर्य वीरांगना दल रजिस्टर
- संस्कार (पुरोहित रजिस्टर)
- आर्य युवा महिला मिलन सदस्यता रजिस्टर
- आर्य बाल वाटिका रजिस्टर
- आर्य कुमार सभा रजिस्टर
- रसीद बुक रजिस्टर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

प्रतिष्ठा में,

JioTV Jio TV+
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV
अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी
Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj.org

देश और समाज विभाजन के षड्यन्त्र का पर्दाफास
आओ! जानें मनुस्मृति का सच
स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

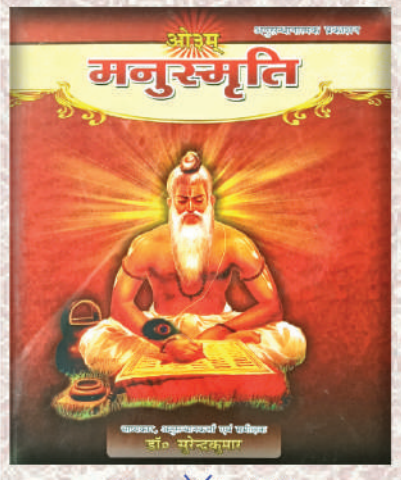

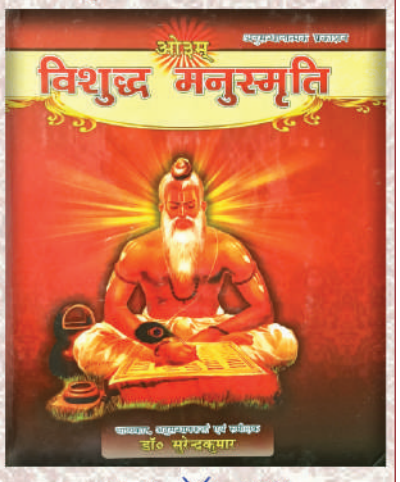

मूल्य : ~~600~~/- 500/-
मूल्य : ~~400~~/- 300/-
मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।
प्रकाशकः- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427 मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE
TOWARDS CREATING A
CLEANER | GREENER | SAFER
TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह